Department of Pre University Education
Second PUC Exam Key Answers March 2023

Hindi -Code:03(NS)

I.अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए:

1) पक्का कुआं 1
2) सत्यता को 1
3) शामनाथ 1
4) मुसी नदी 1
5) सुशीला 1
6) श्री विकास स्वरूप 1

आ) एकांकी के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्पों को चुनकर लिखिए:

7) नायब तहसीलदार 1
8) उपेंद्रनाथ अश्क 1
9) कोयल 1
10) भारवि 1

इ) कोष्ठक में दिए गए उचित कारक, चिन्हों से रिक्त स्थान भरिए:

11) I) के 1
II) पर 1
III) की 1
I√) को 1
√) का 1

ई) निम्नलिखित मुहावरों को अर्थ के साथ जोड़कर लिखिए:

12) I) सफल न होना 1
II) आरंभ करना 1
III) पूर्णरूपेण समर्पण करना 1
I√) आराम लेना 1
√) प्रतीक्षा करना 1

II अ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1 3) सुजान खेती में कई साल से कंचन बरस रहा था कोई दो ढाई हजार हाथ में आ गए तो चित्र कीर्ति धर्म की ओर झुक झोपड़ी साधु संतों का आदर सत्कार होने लगा द्वार पर धोने जलने लगी कानूनगो इलाके में आते तो सुजान महतो के चौपाल में ठहरते। महतो मारे खुशी के फूले न समाते। यार तेरा घर में भजन भाव होने लगे सत्संग होने लगा। गांव में तीन कंए थे. बहुत से खेतों में पानी ना पहुंचता था. खेती मारी जाती थी। इसलिए सुजान ने एक पक्का कुआं बनवा दिया। इस प्रकार सुजान महत्व की संपत्ति बड़ी तो जो काम गांव में किसी ने ना किया था वह बाप दादा के पुण्य प्रताप से सुजान ने कर दिखाया।

3

14.शामनाथ की मां विदेशी सभ्यता से अपरिचित अनपढ़ गवार और बूढ़ी थी। मांस मछली पीना पिलाना आदि से वह दूर रहती थी। वह कुर्सी पर टांगे ऊपर चढ़ा कर बैठती थी कभी नंगे पांव कभी खड़ाऊं पहन कर घूमती थी। पुरानी ढंग के कपड़े पहनती थी। खर्राटे लेने की आदत थी जिससे पार्टी में बाधा पड़ने की संभावना थी। इसलिए शामनाथ पत्नी के साथ मिलकर मां को चीफ से छिपाने का असफल प्रयास करते हैं उन दोनों की चिंता यही थी कि अगर चीफ का साक्षात मां से हो हो गया तो कहीं लज्जित नहीं होना पड़े।

3

15. मन्नू भंडारी की मां नितांत अनपढ़ थी। मनु जी के अनुसार पिता के ठीक विपरीत थी। सवेरे से शाम तक सब की इच्छा हो और पति की आज्ञाओं का पालन करने के लिए सदैव तत्पर रहने वाले धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्यवान और सहनशील पति की हर व्यक्ति को अपना प्राप्ति और बच्चों की हर उचित अनुचित फरमाइश और जिद को अपना फर्ज समझकर बड़े सहज भाव से स्वीकार करती थी। उन्होंने जिंदगी भर अपने लिए कुछ मांगा नहीं चाहा नहीं केवल दिया ही दिया। मन्नू के भाई बहनों का सारा लगाओ मां के साथ था। मां का त्याग और सहिष्णुता निहायत असहाय और मजबूरी में लिपटा हुआ था।

3

16) उ. भोलाराम के जीव ने 5 दिन पहले देह त्यागी पर यमलोक नहीं पहुंचा। इससे यमदूत चित्रगुप्त और धर्मराज सब चिंतित थे। नारद चित्रगुप्त से खबर पाकर उसे ढूंढने निकले। भोलाराम के घर में उनकी पत्नी थी और नारद ने उनसे कुछ पूछताछ की। जब नारद भोलाराम के बारे में सुनकर चलने लगते हैं तब उसकी पत्नी इस प्रकार विनती करती है कि महाराज आप तो साधु हैं । सिद्ध पुरुष हैं । कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि उनकी रुकी हुई पेंशन मिल जाए। इन बच्चों का पेट कुछ दिन भर जाए।

3

17) उ. गांव में प्रारंभिक शिक्षा समाप्त कर विश्वेश्वरैया हाई स्कूल शिक्षा पाने के लिए बेंगलुरु पहुंचे। मैट्रिक में उत्तीर्ण होने के बाद वे बेंगलुरु में ही सेंट्रल कॉलेज में भर्ती हुए। वहीं से विश्वेश्वरैया ने बी. ए. उत्तीर्ण किया । उस वक्त विश्वेश्वरैया की उम्र केवल 19 साल की थी। सेंट्रल कॉलेज के प्रिंसिपल की सिफारिशी से पुणे के साइंस कॉलेज प्रिंसिपल ने विश्वेश्वरैया को अपने कॉलेज में भर्ती किया। यहां उनकी इंजीनियरिंग की शिक्षा प्रारंभ हुई। छात्रवृत्ति भी मिली। वे निश्चिंत होकर अपना पूरा समय पढ़ाई में लगाने लगे।

3

आ) निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहें:

18) इस वाक्य को सुजान भगत ने अपनी पत्नी बुलाकी से कहा। 1

19) इस वाक्य को लेखक डॉ बरसाने लाल चतुर्वेदी जी ने गंगा मैया से पूछा। 1

20) इस वाक्य को मन्नू भंडारी जी के पिता ने अपनी पत्नी से कहा। 1

21) इस वाक्य को शामनाथ ने अपनी मां से कहा। 1

इ) निम्नलिखित में से किन्ही दो का
संदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए:

22) उ. प्रसंग: प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक साहित्य गौरव के कर्तव्य और सत्यता नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉक्टर श्यामसुंदर दास हैं।
संदर्भ: कर्तव्य करने की महत्ता का वर्णन करते हुए लेखक इस वाक्य को पाठकों से कहते हैं।
स्पष्टीकरण: डॉ श्याम सुंदर दास कहते हैं कि कर्तव्य करना हम लोगों का परम धर्म है। संसार में मनुष्य का जीवन कर्तव्य से भरा पड़ा है। घर में पारिवारिक सदस्यों के बीच और समाज में मित्रों पड़ोसियों और प्रजाओं के बीच मनुष्य को अपना कर्तव्य निभाना पड़ता है। समाज के प्रति देश के प्रति सच्चा कर्तव्य निभाने से हम लोगों के चरित्र की शोभा बढ़ती है। कर्तव्य करना न्याय पर निर्भर है। ऐसे सामाजिक न्याय को समझने पर हम लोग प्रेम के साथ कर्तव्य निभा सकते हैं।
3

23) उ. प्रसंग:। प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक साहित्य गौरव के गंगा मैया से साक्षात्कार नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉक्टर बरसाने लाल चतुर्वेदी हैं।
संदर्भ: इस वाक्य को गंगा मैया ने लेखक से साक्षात्कार के अंतर्गत देश के कलुषित वातावरण के संदर्भ में कहती है

स्पष्टीकरण: गंगा मैया देश के कलुषित वातावरण का वर्णन करते हुए कहती है समाज में महंगाई रिश्वतखोरी और पाशविकता बढ़ती चली जा रही है। धर्म का व्यापारीकरण हो रहा है। राजनीति के क्षेत्र में तो कहना ही क्या दल से दल लड़ता रहता है। इन सब का कारण है— कुर्सी के लिए झगड़ा। लेखक कहते हैं कि बाजार में खूब कुर्सियां उपलब्ध है. सस्ती और महंगी से महंगी। कुर्सी का तात्पर्य लेखक को स्पष्ट करते हुए गंगा मैया कहती है– कुर्सी से मेरा मतलब शक्ति और शक्ति माने वैभव धन सम्मान कीर्ति आदि। एक बार जबान पर इसका चस्का लग गया तो फिर कुछ अच्छा नहीं लगता।
3

24) उ. प्रसंग: प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक साहित्य वैभव के भोलाराम का जीव नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक हरिशंकर परसाई हैं।

संदर्भ: भोलाराम के जीव के बारे में चित्रगुप्त ने यमदूत से पूछा तब यह वाक्य यमदूत ने धर्मराज से कहा।

स्पष्टीकरण: जब धर्मराज और चित्रगुप्त दोनों भोलाराम के जीव के आने के बारे में चर्चा कर रहे थे तथा यमदूत के लापता होने की बात कर रहे थे तब यमदूत वहां पहुंच जाता है। यमदूत का कुरूप चेहरा परिश्रम परेशानी और भय के कारण और भी विकृत हो गया था। यमदूत को देखकर चित्रगुप्त चिल्ला उठे– इतने दिन तुम कहां रहे? भोलाराम का जीव कहां है? तब अवधूत ने कहा कि दया निधान! आज तक महीने धोखा नहीं खाया था पर भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया।
3

25) प्रसंग: प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक साहित्य गौरव के यात्रा जापान की नामक पाठ से लिया गया है जिस की लेखिका ममता कालिया है। उषा का शहर का वर्णन करते हुए ममता कालिया जी ने इसे कहा।

स्पष्टीकरण: जापान की राजधानी टोक्यो का कार्यक्रम समाप्त कर लेखिका का दल बुलेट ट्रेन से ओसाका शहर पहुंचा। ओसाका स्टेशन पर उच्चायोग के प्रतिनिधि वैन लेकर इंतजार कर रहे थे। वैन बहुत क्षि प्र गति से चल रही थी। सड़क की दोनों ओर बड़ी इमारतें थी। यहां अजनबी नाम पटों के साथ के साथ कुछ ऐसे नाम पट भी झलक जाते हैं जिनकी हम भारतीयों को सुनने की देखने की आदत पड़ गई है जैसे हिताची, मित्सुबिशी, काकुरा आदि। चमचमाती इमारतों के बाद रंग बिरंगे पेड़ों का सिलसिला शुरू हो जाता है। लेखिका कहती हैं– यहां प्रकृति की तूलिका में सात से अधिक रंग दिखाई दे रहे हैं–मोमिजी की पत्तियां लाल हैं, कुछ नारंगी और गुलाबी रंग भी मिले हैं, सकुरा के पेड़ सफेद फूलों से ढंके हैं। हरा रंग यहां चटक रहा है जैसे पत्तों पर किसी चित्रकार ने एक बार फिर रंग पोत दिया हो।

3

।।।. अ) एक शब्द या वाक्यांश या
वाक्य में उत्तर लिखिए:

26. श्रम या मेहनत करके 1
27. सूरदास के प्रभु श्री कृष्ण 1
28. कायरता को 1
29. मरुथल/रेगिस्तान 1
30. मुदु मंगल 1
31. आग। 1

आ) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो
प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

32. रहीम जी चिता और चिंता के अंतर स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि चिता केवल निर्जीव शरीर को जलाती है लेकिन चिंता जीवित मनुष्य को निरंतर जलाती रहती है। चिंता चिता से भी ज्यादा दुख देती है। चिंता तो मनुष्य को जीव सहित जलाकर समाप्त कर देती है। इसलिए चिंता को चिता समान ही कहा गया है। चिंता से मन और शरीर दोनों जर्जर हो जाते हैं। अतः चिंता चिता से ज्यादा खतरनाक है।

3

33. बादल एवं वसंत ऋतु से हमें प्रेरणा रो उउउमिलती है कि इंसान के जीवन में सुख और दुख दोनों को समान स्थान मिलना चाहिए। नीले आसमान की सुंदरता उसमें घुलमिल जाने वाले बादलों की वजह से ही है। चंचल बादल देखते भी हैं, बरसते हैं, और गायब भी हो जाते हैं। इसी प्रकार इंसान के जीवन रूपी आसमान में कष्ट और दुख आते भी हैं और धीमी भी पड़ जाते हैं। संपूर्ण समाप्त भी होते हैं। ऋतुराज वसंत भी अपनी शोभा दिखाकर आने वाले ऋतुओं के लिए अपना स्थान छोड़कर जाता है। यही प्रकृति का नियम है। इसी प्रकार मनुष्य को भी अपना कर्तव्य निभा कर दूसरों के लिए स्थान मान छोड़कर मिटना चाहिए। जिस प्रकार ऋतुराज बार-बार नित नूतन बनकर आता है वैसे हमें भी जीवन में नित नए प्रयोग करते रहना चाहिए। मनुष्य के इस गुण में ही उसके जीवन की सार्थकता है।

3

34. उ. वेद,उपनिषद,गीता आदि के ज्ञान तत्व की किरणें इसी धरती से उद्भव हुई है । साक्षात सरस्वती नदी अपने ज्ञान की विभिन्न शाखाओं को इस देश में फैला कर इस धरती को ज्ञान भूमि बना दी है । हरियाणा राज्य वीर पांडवों की क्रीड़ा भूमि है। यह प्रदेश सभ्यता और संस्कृति का केंद्र है। इंद्रप्रस्त के सम्मुख इंद्रपुरी भी लजाती है। इस प्रकार हमारे इस धरती में धर्म-कर्म, संस्कृति ,सभ्यता ,ज्ञान- दर्शन आदि सभी क्षेत्रों का विकास समान रूप से हुई हैं ।

3

35.उ. कभी का कहना है कि समाज में ,देश में ,अब पीड़ा पर्वत के समान बन चुकी है। यानि अब समस्याओं के। पर्वत ही खड़े हो गए। हम तो कम होने के विश्वास से देखते ही रहे, पर यह बढ़ती ही चली जा रही है। अब हम चुप नहीं रह सकते। अब इस पर्वत से पवित्र गंगा बहनी चाहिए। अब हमें इन समस्याओं से मुक्त होने की कोशिश करनी पड़ेगी। हमें सुख-शांति मिलनी चाहिए। हम सबको देश में बढ़ती पीड़ा रूपी पर्वत को पिघलाना होगा। संघर्ष के मार्ग से हमें गुजरना होगा और गंगा को निकालना होगा। अगर अब भी हम नहीं जागते तो हमारे विनाश के दिन दूर नहीं है।

3

इ) ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए:

36) ।) प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक साहित्य गौरव के रैदास बानी नामक कविता से लिया गया है जिसके रचयिता संत रैदास हैं।

संदर्भ: इस पद्य में रैदास ने श्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला है।

भाव स्पष्टीकरण: परिश्रम के महत्व को बताते हुए रैदास का कहना है कि उनके अनुसार शर्मा, लगन, निष्ठा व ईमानदारी से किया गया प्रत्येक कार्य श्रेष्ठ व फलदायक होता है। रैदास कड़ी मेहनत कर कार्य करना चाहते हैं। उनके अनुसार मांग कर खाने की जगह परिश्रम की कमाई पर निर्भर रहना चाहिए। परिश्रम से ही सफलता मिलता है।
जो मनुष्य मेहनत करेगा, पसीना बहाएगा,। उसका परिणाम सदा अच्छा ही होगा। ऐसे नेक कमाई कभी निष्फल नहीं होगी।

विशेष: ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया है
श्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है। 4

अथवा

।।) प्रसंग: प्रस्तुत दोहा हमारे पाठ्यपुस्तक साहित्य गौरव के बिहारी के दोहे से लिया गया है। जिसके रचयिता बिहारी लाल जी हैं।

संदर्भ: इस दोहे में बिहारीलाल ने यह बताने का प्रयास किया गया है कि कोई भी वस्तु सुंदर या असुंदर नहीं होती।

भाव स्पष्टीकरण: यह समय समय की बात होती है कि कोई वस्तु हमें किसी समय सुंदर प्रतीत होती है तो वही वस्तु किसी और समय सुंदर नहीं प्रतीत होती। यह मन की रुचि और अरुचि पर निर्भर करता है। इसका अर्थ यह है कि अपने आप में कोई वस्तु सुंदर या कुरूप नहीं होती।

विशेष: ब्रिज और संस्कृत भाषा का प्रयोग हुआ है
नीति परक दोहा। 4

37) ।) प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश हमारे पाठ्यपुस्तक साहित्य गौरव के एक रक्षक की हत्या नामक आधुनिक कविता से लिया गया है जिसके रचयिता कुंवर नारायण है।

संदर्भ: अपने घर के दरवाजे पर तैनात वृक्ष के कट जाने पर कवि उसकी यादों में खो जाते हैं, और साथ ही साथ पर्यावरण के विनाश के प्रति मनुष्य को सचेत भी करते हैं।

भाव स्पष्टीकरण: कवि वृक्ष के प्रति संवेदना जताते हुए कहते हैं कि - यदि वृक्ष के महत्व को हम नहीं समझेंगे और वृक्षों को इसी तरह काटते रहेंगे तो आगे आने वाले दिनों में बहुत संकट झेलने पड़ेंगे । इसकी शुरुआत हो चुकी है। भूत आप लगातार बढ़ रहा है, मौसम में बदलाव आ रहा हैं, और जल संकट लगातार बढ़ रहा है। साफ ऑक्सीजन नहीं मिलने के कारण सैकड़ों बीमारियां फैल रही हैं। अगर हम अब भी पर्यावरण के संरक्षण के लिए सजग नहीं होते हैं तो यह संकट और अधिक विनाशकारी होता जाएगा। इसलिए हमें नदियों को अगर नाले में बदलने से बचाना है तो हमें अच्छी बारिश के लिए वृक्षों को बचाना है। अगर वृक्ष नहीं होंगे तो ऑक्सीजन की जगह सिर्फ धुंआ ही बचेगा ।हमें खाने पीने की चीजों को प्रदूषित होने से बचाना है। उपजाऊ जमीन को रेगिस्तान में तब्दील होने से बचाने के लिए जंगलों को बचाना है। और सिर्फ नदी, हवा, जंगल ही नहीं बल्कि मनुष्यता को भी बचाना है।

विशेषता: ।) खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग हुआ है
।।) इस कविता में कवि पर्यावरण प्रदूषण को रोकने की जरूरत पर बल देते हैं
।।।) नदी, हवा, जंगल की रक्षा के बारे में प्रकाश डाला है
।√) मानवीय भावनाओं की रक्षा करने की बात इस कविता के द्वारा प्रकट हुई है।
4

अथवा

प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश हमारे पाठ्यपुस्तक साहित्य गौरव के गहने नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता कुवेंपू हैं।

संदर्भ: प्रस्तुत पंक्तियों में उन्होंने गहने से अधिक मां और बेटी के रिश्ते को महत्व दिया है।

भाव स्पष्टीकरण:। मां अपनी बेटी से सोने के गहने और रंगीन कपड़े पहनने के लिए कहती है। बेटी ऐसा करने से मना करती है क्योंकि सोने के गहने तकलीफ देते हैं और रंगीन कपड़े उसे मिट्टी में खेलने नहीं देते। इससे मेरे बचपन चला जाएगा या इसका स्वाद नहीं कर सकती है। वह कहते हैं कि देखने वाले को भले ही आनंद दें लेकिन मुझे बड़ा बंधन लगता है।

विशेषता: ।) मां और बेटी के संबंधों को दर्शाया गया है।
।।) वात्सल्य रस का प्रयोग हुआ है। ।।।) बचपन के महत्व के बारे में दर्शाया गया है।
4
।√**)** निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर
लिखिए**:**

38) ।) छोटी बहू बेला अभी अभी शादी कर घर आई है। वह बड़े बाप की इकलौती बेटी है। बहुत पढ़ी-लिखी भी है। घर की अन्य महिलाएं सीधी-सादी है। घर में हिंदू ही सबसे अधिक पढ़ी-लिखी समझी जाती थी और घर में उसकी ही खूब चलती थी। लेकिन छोटी बहू बेला जब से घर में आई घर में तनाव बढ़ने लगे। 10 साल से जो मिश्रा ने उनके घर काम कर रही थी उसे बैठक साफ करने तक का सलीका नहीं है कह कर निकाल दिया। हमेशा वह अपने मायके की ही तारीफ करती है। जैसे यहां के सब लोग मूर्ख और गंवार है। उसी बात को लेकर इंदु और बेला में झगड़ा हुआ। बेला का कहना था कि सिर्फ झाड़ू कराने से कमरा थोड़े ही साफ होता है, ऐसे फूहड़ नौकर को उसके मायके में दो घड़ी भी ना टिकने देते। इन बातों से हिंदू को अपनी भाभी पर क्रोध आया।

5

अथवा

।।) परेश ने दादा जी से कहा कि बेला अपनी अलग गृहस्थी बसाना चाहती है। उसका इस घर में मन नहीं लगता। अगर आप बाघ वाले मकान का प्रबंध कर दे….. जहां वह स्वेच्छा पूर्वक जीवन बिता सकें। दादा जी कहते हैं कि ये उनके जीते जी असंभव है। तुम चिंता ना करो। मैं सबको समझा दूंगा-घर में किसी को तुम्हारी पत्नी का तिरस्कार करने का साहस न होगा। कोई उसका समय नष्ट ना करेगा। ईश्वर की असीम कृपा से हमारे घर सुशिक्षित सुसंस्कृत बहू आई है तो क्या हम अपनी मूर्खता से उसे परेशान कर देंगे? तुम जाओ बेटा, किसी प्रकार की चिंता को मन में स्थान ना दो। मैं कोई ना कोई उपाय ढूंढ निका लूंगा। तुम विश्वास रखो वह अपने आपको परायो में घिरी अनुभव ना करेगी। उसे वही आदर - सत्कार मिलेगा, जो उसे अपने घर में प्राप्त था। किस प्रकार दादाजी ने परेश को मनाया।

5

39) ।) जब भी भारवि शास्त्रार्थ में विजयी होता जो उसके पिता श्रीधर पंडित उसे सार्वजनिक रूप से अपमानित करते थे। जिन पंडितों को भारवि पराजित किया था वे ही भारवि के स्वर में बोलकर उसका परिहास करते थे। दो बार जब पिता ने सब पंडितों के सामने भारवि की निंदा की तो वह क्रोध और ग्लानी से तिलमिला उठा। वह घर नहीं लौट सका। उसकी सारी विजय की उमंग रसातल में चली गई। उसने समझ लिया कि जब तक उसके पिता वर्तमान है तब तक इसी प्रकार अपमानित होना पड़ेगा। वह सोचने लगा कि पिता को पुत्र की उन्नति से प्रसन्नता होनी चाहिए किंतु पिता को उसकी उन्नति से अप्रसन्नता होती है। उसे लगा कि पिता को उसमें दोष ही दोष दीख पड़ते हैं। विद्युन मंडली में सभी पंडितों के सामने उसका अपमान उसे शूल की भांति खटक रहा था। फलस्वरूप पिता के प्रति भारवि का क्रोध है अंतिम सीमा तक पहुंच गया और उसने पिता से बदला लेने का निश्चय किया।

5

अथवा

।।) शास्त्रार्थ में पंडितों को हराते देख पिता ने 12वीं के बारे में सोचा कि पंडितों की हार से उसका अहंकार बढ़ता जा रहा है। उसे अपनी विद्वता का घमंड हो गया है। उसका गर्व सीमा को पार कर रहा है। भैरवी आज संसार का श्रेष्ठ महाकवि है। दूर-दूर के देशों में उसकी समानता करने वाला कोई नहीं है। उसने शास्त्रार्थ में बड़े से बड़े पंडितों को पराजित किया है। उसका पांडित्य देखकर पिता को बहुत प्रसन्नता होती है। पर भारवि के मन में धीरे-धीरे अहंकार बढ़ता जा रहा है। पिता चाहते हैं कि भारवि । और भी अधिक पंडित और महाकवि बने। पर अहंकार उन्नति में बाधक है। इसलिए पिता ने अहंकार पर अंकुश रखना चाहा। जिसे अपने पांडित्य का अभिमान हो जाता है वह अधिक उन्नति नहीं कर सकता। इसी कारण से पिता भारवि को समय-समय पर मूर्ख और अज्ञानी कहते हैं। पिता नहीं चाहते हैं कि अहंकार के कारण उसके पुत्र की उन्नति रुक जाए। इस तरह शास्त्रार्थ में पंडितों को हराते देख पिता ने भारवि के बारे में सोचा।

5

√. अ) वाक्य शुद्ध कीजिए:

40) ।) श्यामा ने कहानी सुनायी। 1
।।) मुझे घबराना पड़ा। 1
।।।) उसे दिखावा नहीं रुचता है। 1
।√) कल माताजी आ रही है। 1

आ) निम्नलिखित वाक्यों को सूचना

अनुसार बदलिए:

41) I) मनोहर तिलमिला उठता था। 1
II) मुझे डर लग रहा है। 1
III) बच्चे शोर मचाएंगे। 1

इ) अन्य लिंग रूप लिखिए:

42) I) नारी 1
II) संपादिका 1
III) तपस्विनी 1

ई) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए:

43) I) दानी 1
II) आज्ञाकारी 1

उ) निम्नलिखित शब्दों के साथ उपसर्ग जोड़कर नये शब्दों का निर्माण कीजिए:

44) I) स्व+देश=स्वदेश 1
II) वि+देश=विदेश

I) प्र + योग =प्रयोग 1
II) उप+ योग=उपयोग

ऊ) निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय अलग कर लिखिए:

45) I) परिचित–परिचय+इत 1
II) पागलपन— पागल+पन 1

√I. अ) किसी एक विषय पर निबंध लिखिए:

46) 1) इंटरनेट

प्रस्तावना:

इंटरनेट के माध्यम से आमजन का जीवन आसान हो गया है क्योंकि इसके द्वारा हम बिना घर के बाहर गए ही अपना बिल जमा करना, फिल्म देखना, व्यापारिक लेन-देन करना, सामान खरीदना आदि काम कर सकते हैं। अब यह हमारे जीवन का एक खास हिस्सा बन चुका है हम कह सकते हैं कि इसके बिना हमें अपने रोजमर्रा के जीवन में तमाम मुश्किलें का सामना करना पड़ सकता है।

इंटरनेट का उपयोग

इसकी सुगमता और उपयोगिता की वजह से, यह हर जगह इस्तेमाल होता है-जैसे कार्यस्थल, स्कूल, कॉलेज, बैंक, शिक्षण संस्थान, प्रशिक्षण केंद्रों पर, दुकान, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, रेस्टोरेंट्स, माल और खासतौर से अपने घर पर हर एक सदस्यों के द्वारा अलग-अलग उद्देश्यों के लिए। जैसे ही हम अपने इंटरनेट सेवा प्रदाता को इसके कनेक्शन के लिए पैसे देते हैं उसी समय से हम इसका प्रयोग दुनिया के किसी भी कोने से एक हफ्ते या उससे ज्यादा समय के लिए कर सकते हैं। यह हमारे इंटरनेट प्लान पर निर्भर करता है। आज के आधुनिक वैज्ञानिक युग में कंप्यूटर हमारे जीवन का मुख्य भाग बन गया है। इसके अभाव में आज हम अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते आज हम अपने रूम या ऑफिस में बैठे-बैठे देश-विदेश जहां भी चाहे इंटरनेट द्वारा अपना संदेश भेज सकते हैं।

निष्कर्ष

इंटरनेट के हमारे जीवन में प्रवेश के साथ ही हमारी दुनिया बड़े पैमाने पर बदल गई है इसके द्वारा हमारे जीवन में कुछ सकारात्मक और नकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। यह विद्यार्थियों, व्यापारियों, सरकारी एजेंसियों, शोध संस्थानों आदि के लिए काफी फायदेमंद है।

अथवा

2) समाज सेवा

प्रस्तावना:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला नहीं रह सकता क्योंकि अकेला रहने से उसकी आवश्यकताएं पूरी नहीं हो सकती। वैरागी लोगों को भी समाज की आवश्यकता पड़ती है। इस तरह मनुष्य जहां भी जाता है, अपनी आवश्यकता 1 को अपने साथ ले जाता है। फिर मनुष्य को अपनी अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहना पडता है और इसलिए वह समाज की रचना करता है। समाज में एक दूसरे की सहायता से सबके काम हो जाते हैं।

व्यक्ति और समाज

व्यक्तियों के समूह को समाज कहते हैं। व्यक्ति पहले कुटुंब की रचना करता है। जहां कई कुटुबं होते हैं उसे गांव कहते हैं। इसी प्रकार नगर देश और समाज व्यक्ति के विकसित रूप हैं। विक्की से समाज अवश्य बनता है, पर बाद में समाज व्यक्ति की उन्नति के लिए प्रयत्न करता है। इस प्रकार दोनों एक दूसरे की उन्नति के लिए सहारा ढूंढते हैं। दोनों का एक दूसरे के प्रति कर्तव्य भी है। जिस समाज में मनुष्य जन्म लेता है, उससे समाज की उन्नति करना, उसकी सेवा करना उसका कर्तव्य है। इसलिए महान पुरुषों ने समाज सेवा को ही उत्तम कर्तव्य और धर्म माना है।

निष्कर्ष:

हम समाज में ही पैदा होते हैं। समाज में ही रहते हैं और समाज में ही मरते हैं। इसलिए अपनी उन्नति के लिए समाज की उन्नति अनिवार्य है। समाज सुखी रहेगा तभी हम सुखी रहेंगे।

अथवा

3) वन महोत्सव

प्रस्तावना: भारतीय संस्कृति के अधिकतर उत्सव हमेशा प्रकृति के साथ जुड़े हुए हैं। चाहे वह सामाजिक हो या धार्मिक। क्योंकि हम अपनी आवश्यकता के लिए हमेशा प्रकृति पर निर्भर रहते हैं और उत्सवों के जरिए हम उनसे

कृतज्ञता का भाव अभिव्यक्त करते हैं। आज हम ऐसे ही एक उत्सव की बात करने जा रहे हैं जिसका नाम है वन महोत्सव।
वन महोत्सव यानी कि पेड़ों का त्यौहार। हमारे जीवन में वनों का काफी महत्व है। हमें प्राणवायु, फल फूल, छाया देते हैं और बदले में हमसे कुछ नहीं मांगते। साथ ही साथ पेड़ हमें जीवन में नैतिकता, परोपकार की भावना और विनम्रता जैसे गुण सिखाते हैं। उनका यही एहसान हम वन महोत्सव के जरिए अभिव्यक्त करते हैं।

वन महोत्सव दिवस
भारत देश में वन महोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। सन 1950 में कृषि मंत्री डॉक्टर कन्हैया लाल मानिक लाल मुंशी द्वारा वन महोत्सव मनाने की शुरुआत हुई थी। यह उत्सव प्रतिवर्ष 1 जुलाई को वन महोत्सव दिवस के रूप में मनाया जाता है और यह सप्ताह तक चलता है। यह एक राष्ट्रीय महोत्सव है।

वन महोत्सव दिवस का महत्व

वन प्राकृतिक संपत्ति है। पेड़ों के साथ हमारे जीवन का काफी गहरा रिश्ता रहा है। सदियों से पेड़ हमें फल फूल और छाया देते आए हुए हैं लेकिन मनुष्य विकास के नाम पर जितने पेड़ काट रहे हैं उतने नए पेड़ों का रोपण नहीं कर रहे हैं और यह एक गंभीर समस्या है।

आज के बच्चे कल का भविष्य है। इसलिए भारत की विद्यालयों में, विश्वविद्यालयों में यह महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है ताकि बच्चों में बचपन से ही वनों के प्रति जागरूकता पैदा हो। सरकारी दफ्तरों,, कई संगठनों और संस्था के द्वारा भी समूह में पौधों को लगाने का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

5

अथवा

१५/८८८
इलाहाबाद
१५ डिसंबर
२०२०

प्रिय मित्र रोहन,

सप्रेम नमस्कार,

नव वर्ष के शुभ आगमन पर मेरी शुभकामनाएं। ईश्वर से प्रार्थना हैं, की आने वाले वर्ष तुम्हारे जीवन को सफलता एवं अपार खुशियों से भरदे।
पिछले हफ्ते तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे नई कालेज के बारे में जानकर बड़ी खुशी हुई। मुझे खेद है कि इस शुभ अवसर पर उपस्थित नहीं हो सका।

तुम्हारे परिश्रम तथा प्रतिभा को देख कर मुझे बहुत खुशी हो रही है। मम्मी और पापा को चरण वंदना कहना।

तुम्हारा मित्र
मनोहर

5

आ) निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

47) ।) सुखा अभिलाषी प्राणी है। 1
।।) सुख वा आनंद प्राप्त करने के लिए। 1
।।।) आनंद पाने के लिए। 1
।√) शून्य। 1
√) अपने आसपास के वातावरण को। 1

इ) हिंदी में अनुवाद कीजिए:

48) ।) कठिन परिश्रम के बिना सफलता प्राप्त नहीं होती। 1
।।) एक अच्छा शिक्षक हमेशा अपने छात्रों को प्रेरित करता है।1
।।।) बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध है। 1

अथवा

गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म की स्थापना की।

।√) भारत विश्व का सबसे लोकतांत्रिक देश है। 1

अथवा

भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्रात्मक देश है।

√) हमारे पाठशाला में एक सुंदर बगीचा है। 1

++++++++++++++++++